

इन संयोजकों का प्रयोग संयुक्तवाक्य में होता है।

(3) **मिश्रित वाक्य**—मिश्रित वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और शेष आश्रित उपवाक्य होते हैं। आश्रित उपवाक्य तीन तरह के हो सकते हैं—संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य, क्रिया-विशेषण उपवाक्य।

संज्ञा उपवाक्य प्रायः कि से प्रारम्भ होता है। यथा—राम ने कहा कि मैं कल जाऊँगा।

विशेषण उपवाक्य में जो, जिसे, जिसने, जिन्होंने, जिनका आदि संयोजक जुड़ते हैं। जैसे—यह वही लड़का है, जो कल आया था। इन संयोजकों से प्रारम्भ होने वाले उपवाक्यों को विशेषण उपवाक्य कहा जाता है।

क्रिया विशेषण उपवाक्य से पहले जब, तब ज्योंही, ज्यों, जहाँ, जिधर, यद्यपि तथापि आदि संयोजक प्रयुक्त होते हैं और ये मिश्रित वाक्य बनाते हैं। जैसे—

1. वह जब आया तब मैं चला गया।
2. यह लड़का उधर ही गया है जिधर से आया था।
3. यद्यपि वह गरीब है तथापि ईमानदार है।

6.2 अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद

अर्थ की दृष्टि से वाक्य आठ प्रकार के होते हैं—

- (1) विधानार्थक—मैं जाता हूँ।
- (2) निषेधवाचक—सीता ने गीत नहीं गाया।
- (3) प्रश्नवाचक—वहाँ कौन गया था?
- (4) विस्मयादिबोधक—वाह ! कितनी सुन्दर रचना है।
- (5) आज्ञावाचक—चलो, बैठकर पढ़ो।
- (6) इच्छावाचक—भगवान तुम्हारा भला करे।
- (7) संदेहार्थक—शायद आज पानी बरसे।
- (8) संकेतार्थक—जब गाड़ी आयेगी, तब मैं चला जाऊँगा।

6.3 वाच्य के आधार पर वाक्य भेद

वाच्य के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

- (i) **कर्तृवाच्य**—जहाँ कर्ता की प्रधानता हो—राम ने दूध पिया।
- (ii) **कर्मवाच्य**—जहाँ कर्म की प्रधानता हो—पत्र पढ़ा गया।
- (iii) **भाववाच्य**—जहाँ भाव की प्रधानता हो—मुझसे चला नहीं जाता।

6.4 प्रयोग के आधार पर वाक्य भेद

प्रयोग के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

- (i) **कर्तरि प्रयोग**—जहाँ वाक्य की क्रिया कर्तानुसार होती है—मोहन घर गया।
- (ii) **कर्मणि प्रयोग**—जहाँ वाक्य की क्रिया कर्मानुसार होती है—मोहन ने रोटी खाई।
- (iii) **भावे प्रयोग**—जहाँ वाक्य की क्रिया सदैव पुल्लिङ्ग, एकवचन, अन्य पुरुष में हो—राम ने कुत्ते को मारा।

वाक्य शुद्धि

वाक्य भाषा की न्यूनतम इकाई है। अतः भाषा की शुद्धता के लिए वर्तनी की शुद्धता तथा वाक्य (गठन) की शुद्धता परमावश्यक है। वाक्य में

वर्तनी की अशुद्धियाँ, व्याकरणिक अशुद्धियाँ, शब्द प्रयोग की अशुद्धियाँ, आदि नहीं होनी चाहिए। यहाँ अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके दिखाया गया है। कुछ प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं—

अशुद्ध वाक्य

- विष्णु के अनेकों नाम हैं।
- मैंने देवी का दर्शन कर लिया।
- शेर को देखकर मेरा प्राण निकल गया।
- कृपया आप खड़े रहो।
- पिताजी आ रहा है।
- महादेवी जी छायावादी कवित्री हैं।
- साकेत का रचैता कौन है?
- उसका चरित्र उज्ज्वल है।
- यहाँ ताजा गन्ने का रस मिलता है।
- आप लोग अपनी राय दें।
- कृपया छुट्टी देने की कृपा करें।
- मैं प्रातःकाल के समय टहलने जाता हूँ।
- वृक्षों पर मोर बैठा था।
- पूज्यनीय पिताजी को प्रणाम।
- मैंने तेरे को बोला तो था।
- हम हमारी माताजी को घर ले आये।
- कल मैंने दिल्ली जाना है।
- वह घोड़े की पीठ पर सवार था।
- वह कमरे के अन्दर पढ़ रहा था।
- मैं आपके सहारे पर जीवित हूँ।
- पुत्री पराया धन होता है।
- तेरे से इतना भी नहीं खाया जाता।
- मैं गाने की कसरत कर रहा हूँ।
- देश में भूख की समस्या है।
- तलवार एक उपयोगी अस्त्र है।
- बन्दूक एक उपयोगी शस्त्र है।
- ये आकाशवाणी है।
- मेरे को कुछ याद नहीं।
- हमारे प्रदेश के मनुष्य परिश्रमी हैं।
- आपके प्रश्न का समाधान मिल गया।
- आपकी समस्या का उत्तर मेरे पास है।
- विंध्याचल पर्वत मध्य भारत में है।
- यह आगरा की मिठाई है।
- सोनों के भाव बढ़ गए हैं।

शुद्ध वाक्य

- विष्णु के अनेक नाम हैं।
- मैंने देवी के दर्शन कर लिए।
- शेर को देखकर मेरे प्राण निकल गये।
- कृपया आप खड़े रहें।
- पिताजी आ रहे हैं।
- महादेवीजी छायावादी कवयित्री हैं।
- साकेत का रचयिता कौन है?
- उसका चरित्र उज्ज्वल है।
- यहाँ गन्ने का ताजा रस मिलता है।
- आप लोग अपनी-अपनी राय दें।
- छुट्टी देने की कृपा करें।
- मैं प्रातःकाल टहलने जाता हूँ।
- वृक्षों पर मोर बैठे थे।
- पूजनीय पिताजी को प्रणाम।
- मैंने तुझसे कहा तो था।
- हम अपनी माताजी को घर ले आये।
- कल मुझे दिल्ली जाना है।
- वह घोड़े पर सवार था।
- वह कमरे में पढ़ रहा था।
- मैं आपके सहारे जीवित हूँ।
- पुत्री पराया धन होती है।
- तुझसे इतना भी नहीं खाया जाता।
- मैं गाने का अभ्यास कर रहा हूँ।
- देश में भुखमरी की समस्या है।
- तलवार एक उपयोगी शस्त्र है।
- बन्दूक एक उपयोगी अस्त्र है।
- यह आकाशवाणी है।
- मुझे कुछ याद नहीं।
- हमारे प्रदेश के लोग परिश्रमी हैं।
- आपके प्रश्न का उत्तर मिल गया।
- आपकी समस्या का समाधान मेरे पास है।
- विंध्याचल मध्य भारत में है।
- यह आगरे की मिठाई है।
- सोने के भाव बढ़ गए हैं।

अशुद्ध वाक्य

- देश की **वर्तमान मौजूदा** हालत ठीक नहीं है।
- प्रत्येक बालक को **चार-चार** केले दें।
- हम** खाना खाए हैं।
- दूध में **कौन** पड़ा है।
- साहित्य और जीवन का **घोर** सम्बन्ध
- उमंग **एक प्रकार** का मराठी छन्द होता है।
- आपका पत्र **धन्यवाद** सहित मिला।
- वहाँ **भारी-भरकम** भीड़ लगी थी।
- भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री **अर्पित** की।
- मेरे** को **तेरी** पुस्तक चाहिए।
- मेरे लिए **ठण्डी बर्फ** लाओ।
- मुझे उनसे **आवश्यक** काम था।
- क्रिकेट टीम प्रधानाध्यापक चुनेंगे।
- कल **शायद** वर्षा अवश्य होगी।
- मैं इस बात का **स्पष्टीकरण करने** के लिए तैयार हूँ।
- यह कार्य आप पर ही **निर्भर** करता है।
- आजकल वहाँ काफी **सरगर्मी** दिख रही है।
- आपका, भवदीय
- भारत पाक के बीच पिछले वर्षों में बहुत कटुता **उत्पन्न** हुई है।
- नारायण, जिसे छः वर्ष की सजा हुई थी वास्तव में कातिल नहीं था।
- कल मैं **कलकत्ते** गया था।
- यह **मेरा** हस्ताक्षर नहीं है।
- भूकम्प में उसकी **भारी** हानि हुई है।
- जो सोता है वह **खोता** है।
- आप हस्ताक्षर **कर दो**।
- कुलपति ने **डिग्रियाँ** वितरित कीं।
- वह जाता **होएगा**।
- उसके गले में **एक फूल** की माला थी।
- पाँच** आदमी का खाना बनाना है।

शुद्ध वाक्य

- देश की **वर्तमान** हालत ठीक नहीं है।
- प्रत्येक बालक को **चार** केले दें।
- हमने** खाना खाया है।
- दूध में **क्या** पड़ा है?
- साहित्य और जीवन का **घनिष्ठ** सम्बन्ध है।
- उमंग **एक** मराठी छन्द है।
- आपका पत्र मिला, **धन्यवाद**
- वहाँ **भारी** भीड़ लगी थी।
- भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री **प्रदान** की।
- मुझे** **तुम्हारी** पुस्तक चाहिए।
- मेरे लिए **बर्फ** लाओ।
- मुझे उनसे **आवश्यक** काम था।
- प्रधानाध्यापक क्रिकेट टीम का चुनाव करेंगे।
- कल वर्षा अवश्य होगी।
- मैं इस बात के **स्पष्टीकरण** के लिए तैयार हूँ।
- यह कार्य आप पर ही **निर्भर** है।
- आजकल वहाँ काफी **सरगर्मी** है।
- दोनों में से एक का ही प्रयोग होगा।
- भारत-पाक के बीच पिछले वर्षों में बहुत कटुता बढ़ गई है।
- छः वर्ष की सजा काट रहा नारायण वास्तव में कातिल नहीं था।
- कल मैं **कलकत्ता** गया था।
- ये **मेरे** हस्ताक्षर नहीं हैं।
- भूकम्प में उसकी **बड़ी** हानि हुई है।
- जो सोता है **सो** खोता है।
- आप हस्ताक्षर **कर दीजिए**।
- कुलपति ने **डिग्रियाँ** प्रदान कीं।
- वह जाता **होगा**।
- उसके गले में **फूलों** की एक माला थी।
- पाँच** आदमियों का खाना बनाना है।

अशुद्ध वाक्य

- वहाँ **कोई** खड़े हैं।
- कृपया इसका **स्पष्टीकरण करने** की कृपा करें।
- इसके बाद वह **वापस लौट** गया।
- रोगी** से खिचड़ी खाई गई।
- वह **धर्मार्थ** के लिए दान देता है।
- किताब** के अन्दर दो सौ पृष्ठ हैं।
- अपन** ठीक रास्ते पर हैं।
- अभी तुम्हें कई बातें **सीखना** है।
- मैं **मेरे** घर जा रहा हूँ।
- मुझे **आवश्यक** कार्य है।
- मैं **मन** ही मन में पछताया।
- तुम कहाँ पर रहते हो?
- उसके **चाचा** को लड़की हुई है।
- लेकिन फिर भी आपको आना पड़ेगा।
- उसे अंग्रेजी का अच्छा बोध है।
- वह कक्षा का **सर्वश्रेष्ठ** अच्छा छात्र है।
- शरणागत में **आए** व्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए।
- नीचे** को मत देखो।
- पति-पत्नी **आई** है।
- मैंने **बोला**।
- वे **विद्वान्** महिला हैं।
- गाय का **दूध** गरम पियो।
- शायद वह **जरूर** आएगा।
- आपका** कमीज फट गया।
- वह **निरपराधी** है।
- अपराधी दण्ड देने योग्य है।
- मैं **तुम्हारा** हाथ-पाँव तोड़ दूँगा।
- उसकी **माधुर्यता** अवर्णनीय है।
- आपने** मुस्करा दिया।
- दही **खट्टी** है।
- तौलिया **सूख** रहा है।
- वह **निर्दयी** है।
- वह **निर्धनी** है।
- उसकी **शौर्यता** दर्शनीय थी।
- पूजनीय** पिताजी को प्रणाम
- तुलसी श्रेष्ठ कवि था।
- सूर रामभक्त कवि थे।

शुद्ध वाक्य

- वहाँ **कोई** खड़ा है।
- कृपया इसका **स्पष्टीकरण** दें।
- इसके बाद वह **वापस चला** गया।
- रोगी** ने खिचड़ी खाई।
- वह **धर्मार्थ** दान देता है।
- किताब** में दो सौ पृष्ठ हैं।
- हम** लोग ठीक रास्ते पर हैं।
- अभी तुम्हें कई बातें **सीखनी** हैं।
- मैं **अपने** घर जा रहा हूँ।
- मुझे **आवश्यक** कार्य है।
- मैं **मन** ही मन पछताया।
- तुम कहाँ रहते हो?
- उसके **चाचा** के लड़की हुई है।
- लेकिन आपको आना पड़ेगा।
- उसे अंग्रेजी का अच्छा **ज्ञान** है।
- वह कक्षा का **सर्वश्रेष्ठ** छात्र है।
- शरण में **आए** व्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए।
- नीचे** मत देखो।
- पति-पत्नी **आये** हैं।
- मैंने **कहा**।
- वे **विदुषी** महिला हैं।
- गाय का गरम **दूध** पीयो।
- शायद वह **आयेगा**।
- आपकी** कमीज फट गई।
- वह **निरपराध** है।
- अपराधी दण्ड **पाने** योग्य है।
- मैं **तुम्हारे** हाथ-पाँव तोड़ दूँगा।
- उसकी **मधुरता** अवर्णनीय है।
- आप** मुस्करा दिये।
- दही **खट्टा** है।
- तौलिया **सूख** रही है।
- वह **निर्दय** है।
- वह **निर्धन** है।
- उसका **शौर्य** दर्शनीय था।
- पूजनीय** पिताजी को प्रणाम।
- तुलसी श्रेष्ठ कवि थे।
- सूर कृष्णभक्त कवि थे।

अशुद्ध वाक्य

- मैंने तेरे को बोला तो था।
- उसके तीन चाचे हैं।
- चांदियों के दाम बढ़ गए हैं।
- मैं आपसे श्रद्धा करता हूँ।
- वह वापिस आ गया।
- मैं मेरी माताजी को दिखाने गया था।

शुद्ध वाक्य

- मैंने तुमसे कहा तो था।
- उसके तीन चाचा हैं।
- चांदी के दाम बढ़ गए हैं।
- मैं आप पर श्रद्धा करता हूँ।
- वह वापस आ गया।
- मैं अपनी माताजी को दिखाने गया था।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

अशुद्ध वाक्य

1. वह कुर्सी में बैठा था।
2. उन्होंने हाथ जोड़ा।
3. बेटी पराया धन होता है।
4. मैंने बोला।
5. मेरा प्राण संकट में है।

शुद्ध वाक्य

- वह कुर्सी पर बैठा था।
- उन्होंने हाथ जोड़े।
- बेटी पराया धन होती है।
- मैं बोला।
- मेरे प्राण संकट में हैं।

YUKTI ज्ञान—प्राण शब्द का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है अतः मेरा प्राण के स्थान पर मेरे प्राण और है के स्थान पर हैं होगा।

6. वहाँ अनेकों लोग थे।

वहाँ अनेक लोग थे। उ.प्र. टी.ई.टी.

YUKTI ज्ञान—अनेकों शब्द अशुद्ध है। इसका शुद्ध रूप अनेक है जो एक का बहुवचन है।

7. मैंने कार्य करा है।

मैंने कार्य किया है।

YUKTI ज्ञान—करा है के स्थान पर किया है होना चाहिए।

8. वह प्रातःकाल के समय आया था।

वह प्रातःकाल आया था।

YUKTI ज्ञान—प्रातःकाल के समय में पुनरावृत्ति है क्योंकि काल, समय समानार्थी है अतः समय शब्द हट जाएगा।

9. यह कहानी जो है सुदर्शन की लिखी है।
10. बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीती है।

यह कहानी सुदर्शन की लिखी है।
बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीते हैं।

YUKTI ज्ञान—क्रिया बहुवचन की होगी अतः पीती है के स्थान पर पीते हैं का प्रयोग शुद्ध है।

11. इनमें से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

- (a) मेरे को कल छुट्टी जाना है।
- (b) आप ही तो मना किए थे।
- (c) मुझे लौटने में विलम्ब होगा।

- (d) कपड़े डालकर तुमने क्या करा?

उत्तर—(c) मुझे लौटने में विलम्ब होगा।

YUKTI ज्ञान—(a) 'मेरे को' अशुद्ध है इसके स्थान पर 'मुझे' होना चाहिए।

(b) आप ने ही तो मना किया था — शुद्ध वाक्य है।

(d) कपड़े पहनकर तुमने क्या किया? डालकर के स्थान पर पहनकर होना चाहिए तथा करा के स्थान पर किया होना चाहिए।

12. इनमें से शुद्ध वाक्य छँटिए—

- (a) जीवन और साहित्य का घोर सम्बन्ध है।
 - (b) जीवन और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है।
 - (c) जीवन और साहित्य का गम्भीर सम्बन्ध है।
 - (d) जीवन और साहित्य का अपार सम्बन्ध है।
- उत्तर—(b) जीवन और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

YUKTI ज्ञान—जीवन और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है— शुद्ध वाक्य होगा, शेष तीनों वाक्यों में प्रयुक्त घोर, गंभीर, अपार शब्द ठीक (उपयुक्त) नहीं हैं।

13. कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

- (a) मैं आपके प्रति श्रद्धा करता हूँ।
- (b) मैं आपके प्रति श्रद्धा रखता हूँ।
- (c) मैं आपकी श्रद्धा करता हूँ।
- (d) मैं आपके प्रति श्रद्धा मानता हूँ।

उत्तर—(b) मैं आपके प्रति श्रद्धा रखता हूँ।

14. वाक्य के जिस भाग में त्रुटि हो उस पर निशान लगाएँ।

मैं प्रातःकाल के समय टहलने जाता हूँ।

a b c d

उत्तर—(b) प्रातःकाल के समय के स्थान पर प्रातःकाल होना चाहिए।

15. अशुद्ध वाक्य छँटिए—

हरियाणा टी.ई.टी.

- (a) मैं कानपुर गया था।
- (b) मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करो।
- (c) मेरा परीक्षाफल उत्तम है।
- (d) गुरुजनों के ऊपर श्रद्धा रखो।

उत्तर—(d) गुरुजनों के ऊपर श्रद्धा रखो अशुद्ध वाक्य है इसके स्थान पर 'गुरुजनों पर श्रद्धा रखो' होना चाहिए।

अध्याय 7. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ



मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है—अभ्यास अथवा बातचीत। मुहावरे के अर्थ में लक्षणा शब्द शक्ति काम करती है, इसलिए इनका शब्दार्थ नहीं लिया जाता, अपितु लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है। भाषा को सशक्त, सजीव, प्रभावोत्पादक बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है।

लोकोक्ति का अर्थ है, लोक की उक्ति, अर्थात् लोक प्रचलित कथन। किसी कथन को सजीव एवं रोचक बनाने में लोकोक्ति की विशिष्ट भूमिका रहती है। सम्भवतः इसी कारण वार्तालाप में लोकोक्तियों का प्रयोग अधिक होता है।

YUKTI ज्ञान—लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाक्यांश होता है। मुहावरों के अन्त में प्रायः 'ना' लगा होता है; जैसे—ईद का चाँद होना, पर लोकोक्तियाँ पूर्ण वाक्य होती हैं। यथा—अरहर की टट्टी गुजराती ताला। मुहावरे गद्यात्मक ही होते हैं, जबकि लोकोक्तियाँ गद्यात्मक एवं पद्यात्मक दोनों तरह की हो सकती हैं। मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता में पर्याप्त वृद्धि हो जाती है। कभी-कभी जो बात एक अनुच्छेद में कर पाते हैं उसे कुशल वक्ता एक लोकोक्ति या मुहावरे के द्वारा व्यक्त कर देता है। ध्यान रहे वाक्य में लोकोक्ति या मुहावरे का प्रयोग करें, उसके अर्थ का नहीं तथा प्रयोग ऐसा हो जो सबकी समझ में आ जाये।

यहाँ प्रमुख मुहावरे और लोकोक्तियाँ दी जा रही हैं।

प्रमुख मुहावरे एवं वाक्य प्रयोग

- 1. अँगूठा दिखाना = मना कर देना।**
प्रयोग—बेटी के विवाह में जब मैं अपने भाई से आर्थिक सहायता माँगने गया तो उसने अँगूठा दिखा दिया।
- 2. अक्ल का अंधा होना = मूर्ख होना।**
प्रयोग—तुम तो अक्ल के अंधे हो, चाहे जितना समझाओ पर मानते ही नहीं।
- 3. अक्ल पर पत्थर पड़ना = बुद्धि भ्रष्ट होना।**
प्रयोग—कैकेयी को दशरथ ने बहुत समझाया कि वह राम को वनवास न दे, पर वह न मानी, क्योंकि उसकी अक्ल पर तो पत्थर पड़े हुए थे।
- 4. अन्धे की लकड़ी होना = एकमात्र सहारा होना।**
प्रयोग—इकलौता पुत्र माता-पिता के लिए तो अन्धे की लकड़ी जैसा होता है।
- 5. अपना उल्लू सीधा करना = अपना काम बनाना (अपना स्वार्थ सिद्ध करना)।**
प्रयोग—राजनीति में तो कोई किसी का सगा नहीं, सब अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं।
- 6. अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना = आत्म-प्रशंसा करना।**
प्रयोग—अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनने से क्या लाभ, तारीफ तो तब है, जब दूसरे तुम्हारी प्रशंसा करें।
- 7. अपने पैरों पर खड़े होना = स्वावलम्बी बनना।**
प्रयोग—पुत्र का विवाह तभी करना चाहिए, जब वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाये।
- 8. अमरबेल बनना = वृद्धता से चिपकना।**
प्रयोग—मैंने राधा और श्याम को अलग करने की बहुत कोशिश की, पर वह तो जैसे अमरबेल बन गई है।
- 9. अपना सोना खोटा तो परखैया का क्या दोष = जब अपने ही लोग बुरे हों तो पराये का क्या दोष?**
प्रयोग—पिता ने बेटे के फेल हो जाने पर कहा — जब अपना सोना खोटा हो तो परखैया का क्या दोष। तुममें अक्ल ही नहीं है, परीक्षा पद्धति को 'क्या दोष दूँ।
- 10. आकाश टूट पड़ना = अचानक विपत्ति आ जाना।**
प्रयोग—पिताजी के अचानक निधन से मेरे परिवार पर तो आकाश (आसमान) टूट पड़ा है। एकमात्र वही तो कमाने वाले सदस्य थे।
- 11. आगे कुआँ पीछे खाई होना = दोनों तरफ से विपत्तियों से घिर जाना।**
प्रयोग—खेत का अधिग्रहण सरकार ने क्या कर लिया मेरे लिए तो आगे कुआँ पीछे खाई वाली स्थिति बन गई। अगर दे देता हूँ तो करूँगा क्या और मना करता हूँ तो जेल जाना पड़ेगा, समझ में नहीं आता क्या करूँ?
- 12. अपना-सा मुँह लेकर रह जाना = शर्मिन्दा होना।**
प्रयोग—जब भाइन की पोल खुली तो वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।
- 13. अपनी खिचड़ी अलग पकाना = सबसे पृथक् रहना।**
प्रयोग—समाज में रहना है तो सबके साथ चलना पड़ेगा। यहाँ अपनी खिचड़ी अलग पकाने से काम नहीं चलता।
- 14. अन्धेर नगरी होना = धाँधली होना।**
प्रयोग—भइया यहाँ बचकर रहना, क्योंकि इस दफ्तर में तो अन्धेर नगरी है, यहाँ किसी की सुनवाई नहीं होती।
- 15. आँखें लाल-पीली करना = क्रोध करना।**
प्रयोग—शिव धनुष को टूटा देखकर परशुराम जनक की सभा में आये और आँखें लाल-पीली करने लगे।
- 16. आँखों का तारा होना = अत्यधिक प्रिय होना।**
प्रयोग—इकलौता बेटा होने से वह पूरे परिवार की आँखों का तारा है।
- 17. आँखें नीची होना = लज्जित होना।**
प्रयोग—परीक्षा में नकल करके तुमने तो मेरी आँखें नीची कर दीं।
- 18. आँख में खटकना = अच्छा न लगना।**
प्रयोग—भारत की उन्नति कई देशों की आँखों में खटकती है।
- 19. आँखें बिछाना = स्वागत हेतु प्रस्तुत रहना।**
प्रयोग—आप हमारे घर आएँ तो सही, मैं तो आँखें बिछाये बैठा हूँ।
- 20. आग बबूला होना = अत्यधिक क्रोध करना।**
प्रयोग—नौकर से नया टी सेट टूट जाने पर मालकिन आग बबूला हो गई।
- 21. आग में घी डालना = क्रोध भड़काना।**
प्रयोग—लक्ष्मण की मुस्कान परशुरामजी के लिए आग में घी डालने का काम कर रही थी।
- 22. आटे-दाल का भाव मालूम पड़ना = असलियत सामने आना।**
प्रयोग—जब से मेरी शादी हुई है, मुझे आटे-दाल का भाव मालूम पड़ गया है।
- 23. आसमान सिर पर उठाना = अत्यधिक शोरगुल करना।**
प्रयोग—कक्षा में छात्रों का शोर सुनकर अध्यापक ने कहा, शान्त हो जाइये, आप लोगों ने तो आसमान सिर पर उठा रखा है।
- 24. आसमान टूट पड़ना = अचानक मुसीबत आ जाना।**
प्रयोग—पिताजी को हृदयाघात होने पर बेचारे मोहन के सिर पर तो मानो आसमान ही टूट पड़ा।
- 25. आड़े हाथों लेना = ताना देकर शर्मिन्दा करना।**
प्रयोग—ज्यादा बढ़-चढ़कर बोलने वालों की बोलती तभी बन्द होती है जब कोई उन्हें आड़े हाथों लेता है।
- 26. ईद का चाँद होना = बहुत कम दिखाई पड़ना।**
प्रयोग—अरे मियाँ जब से तुम्हारी शादी हुई है, तुम तो ईद के चाँद हो गये हो।
- 27. ईट का जवाब पत्थर से देना = कड़ा उत्तर देना।**

प्रयोग—पाकिस्तानी सेना की सीमा पर होने वाली गोलीबारी तभी रुकती है, जब भारत की सेना ईट का जवाब पत्थर से देती है।

28. ईश्वर की माया, कहीं धूप तो कहीं छाया = भाग्य की विचित्रता का अनुभव करना।

प्रयोग—अभी धूप थी और अब पानी बरसने लगा। इसी को कहते हैं, ईश्वर की माया कहीं धूप तो कहीं छाया।

29. उड़ती चिड़िया पहचानना = अनुभवी होना।

प्रयोग—तुम किसी से प्रेम करने लगे हो तभी तो तुम्हारा यह हाल है। मुझसे सच उगल दो, क्योंकि मैं उड़ती चिड़िया पहचान लेता हूँ।

30. उधेड़बुन में पड़ना = सोच-विचार में पड़ जाना।

प्रयोग—आप किस उधेड़बुन में पड़ गए? अगर बेटे की शादी नहीं करनी है तो वैसा जवाब दे दो।

31. उंगली उठाना = दोष लगाना।

प्रयोग—किसी नेता पर उंगली उठाना तो आसान है पर स्वयं नेता बनकर देखो तब पता चलेगा।

32. उल्लू बनाना = बेवकूफ बनाना।

प्रयोग—वह देश-देशान्तर में घूमी-फिरी है अतः उसे उल्लू बनाना आसान नहीं है।

33. उंगली पर नचाना = पूरी तरह वश में कर लेना।

प्रयोग—शीला तो अपने पति को उंगली पर नचा रही है। वह किसी की बात नहीं सुनेगी।

34. उल्टे छुरे से मूँड़ना = मूर्ख बनाना।

प्रयोग—सुनार ने हार में से 30 प्रतिशत बड़ा काटा और दस प्रतिशत अन्य कटौती करके मुझे तो उल्टे छुरे से मूँड़ दिया।

35. ऊँट के मुँह में जीरा होना = आवश्यकता से बहुत कम।

प्रयोग—किसी पहलवान को 250 ग्राम दूध पिलाना ऊँट के मुँह में जीरा देना जैसा है।

36. ऐसी वैसी होना = चरित्रभ्रष्ट होना।

प्रयोग—राधा ने कहा — मैं ऐसी-वैसी लड़की नहीं हूँ जो तुम्हारे बहकाने में आ जाऊँ।

37. ऐरा गैरा नत्थू खैरा होना = कोई महत्व न देना।

प्रयोग—आपने मुझे मीटिंग से बाहर कर दिया, मैं क्या आपको ऐरा गैरा नत्थू खैरा लगता हूँ।

38. एक आँख से देखना = सबको समान समझना।

प्रयोग—मैं तो अपने बेटा-बेटी को एक आँख से देखता हूँ। अपनी वसीयत में दोनों को आधी-आधी सम्पत्ति दे जाऊँगा।

39. एड़ी चोटी का जोर लगाना = पूरा प्रयास करना।

प्रयोग—आई.एस. की परीक्षा पास करने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाना पड़ता है, फिर भी बहुतों को निराशा होना पड़ता है।

40. एक लाठी से हॉकना = अच्छे-बुरे में भेद न करना।

प्रयोग—देखो भाई मैं तो पुलिस वाला आदमी हूँ अतः सबको एक लाठी से हॉकना और कोई पक्षपात न करना मेरे प्रशिक्षण में शामिल है।

41. एक के तीन बनाना = अधिक मुनाफा कमाना।

प्रयोग—व्यापारियों की सामान्य प्रवृत्ति एक के तीन बनाने की होती है।

42. एक और एक ग्यारह होना = मेल से शक्ति बढ़ जाना।

प्रयोग—तुम दोनों भाई मिलकर फैक्ट्री चलाओ, फिर देखो कितना लाभ होता है, क्योंकि एक और एक ग्यारह होते हैं।

43. एक हाथ से ताली न बजना = किसी एक पक्ष का दोष न होना।

प्रयोग—अगर तुम दोनों में मुकदमा चल रहा है तो दोनों एक-दूसरे से असंतुष्ट होंगे, क्योंकि एक हाथ से ताली कभी नहीं बजती।

44. एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना = एक जैसी प्रवृत्ति वाले होना।

प्रयोग—आजकल के नेता, चाहे वे जिस पार्टी के हों, स्वार्थी हैं। देश का कल्याण कोई नहीं चाहता, क्योंकि वे सभी एक थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

45. ओखली में सिर देना = जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना।

प्रयोग—जब फौज में भरती हुआ हूँ तो मौत से क्या डरना। मैंने तो अपने आप ओखली में सिर दिया है।

46. आँधे मुँह गिरना = बड़ी हानि होना।

प्रयोग—शेयर मार्केट के आँधे मुँह गिरने से उसे भारी नुकसान हो गया।

47. ओठ फड़कना = क्रोध आना।

प्रयोग—शिव-धनुष को टूटा देखकर परशुराम के ओठ फड़कने लगे।

48. ओठ चबाना = क्रोध को पी लेना।

प्रयोग—नशेड़ी पिता द्वारा माँ की पिटाई देखकर युवा पुत्र ओठ चबाकर रह गया।

49. आँधी खोपड़ी का होना = मूर्ख होना।

प्रयोग—विभीषण ने तो तुम्हारे हित की बात कही थी और तुमने उसे लात मार कर भगा दिया यह तो साबित करता है कि तुम (रावण) आँधी खोपड़ी के हो।

50. कलेजे पर साँप लोटना = ईर्ष्या से जलना।

प्रयोग—जब से मेरा बेटा आई.ए.एस. बना है, तब से पड़ोसियों के कलेजे पर तो मानो साँप लोट गया है।

51. कलेजा ठण्डा होना = शान्ति मिलना।

प्रयोग—पिता के हत्यारे को फाँसी की सजा मिलने पर मोहन का कलेजा ठण्डा हो गया।

52. कान में तेल डालकर बैठना = सुनी-अनसुनी करना।

प्रयोग—मैं कब से आपसे गुहार लगा रहा हूँ, पर आप तो जैसे कान में तेल डालकर बैठे हैं।

53. कान काटना = होशियार होना।

प्रयोग—यह देखने में बच्चा है, पर क्रिकेट में बड़ों-बड़ों के कान काटता है।

54. काजल की कोठरी होना = कलंक से बच न पाना।

प्रयोग—पुलिस विभाग को आप काजल की कोठरी मानिए। बड़े-बड़े ईमानदार भी पुलिस में नौकरी करके इस काजल की कोठरी में दागदार हो गये।

55. कूप-मण्डूक होना = सीमित ज्ञान होना।

प्रयोग—तुम तो निरे कूप-मण्डूक हो, अपनी दुकान के बाहर भी कभी झाँक लिया करो, तब पता चलेगा कि दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच गई है।

56. कान का कच्चा होना = सुनी हुई बातों पर विश्वास कर लेना।

प्रयोग—अधिकारी के लिए कान का कच्चा होना ठीक नहीं माना जाता।

57. कटे पर नमक छिड़कना = दुखी का दुःख और बढ़ाना।

प्रयोग—वह परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने से वैसे ही दुखी था अब आप उसे वज्रमुख बतकर कटे पर नमक छिड़कने का काम कर रहे हैं।

58. कंठ का हार होना = अत्यंत प्रिय होना।

प्रयोग—इकलौती संतान माता-पिता के कंठ का हार बन जाती है।

59. कलेजे पर पत्थर रखना = दिल को मजबूत का लेना।

प्रयोग—युवा पुत्र की मौत को माँ-बाप कलेजे पर पत्थर रखकर ही झेल पाते हैं।

60. कलेजा धक-धक करना = भयभीत होना

प्रयोग—जब लुटेरों ने चलती बस में हथियार निकाल लिए तो सभी यात्रियों कर कलेजा धक-धक करने लगा।

61. काठ का उल्लू होना = मूर्ख होना।

प्रयोग—यार बार-बार जेब कटवा लेते हो मुझे तो तुम पूरे काठ के उल्लू लगते हो।

62. कनकौए उड़ाना = व्यर्थ की बात करना।

प्रयोग—हमेशा कनकौए उड़ाते रहते हो, कभी तो अक्ल की बात किया करो।

63. कान पर जू न रेंगना = सुनी-अनसुनी कर देना।

प्रयोग—मैंने कितनी बार आपसे अपने ऋण को चुकाने के लिए कहा है, पर आपके कान पर जू तक नहीं रेंगती।

64. खयाली पुलाव पकाना = हवाई किले बनाना, असम्भव कल्पनाओं में लीन रहना।

प्रयोग—आपका यह सोचना कि मेरी बुनावी जीत होने पर मुख्यमंत्री मेरे ही दल का बनेगा, बिलकुल असम्भव बात है। हाँ, खयाली पुलाव पकाने से भला आपको कौन रोक सकता है।

65. खटाई में पड़ना = व्यवधान आ जाना।

प्रयोग—अच्छ-भला दीक्षान्त समारोह हो रहा था, पर कर्मचारियों की हड़ताल हो गई। अब तो मामला खटाई में पड़ा जान पड़ता है।

66. खाक छानना = मारा-मारा फिरना।

प्रयोग—बेरोजगारों को नौकरी पाने के लिए दर-दर की खाक छाननी पड़ती है।

67. खून का प्यासा होना = जानी दुश्मन।

प्रयोग—अंग्रेजों के लाठी चार्ज में लाला लाजपत राय के घायल होने की खबर सुनकर भगत सिंह अंग्रेजों के खून के प्यासे हो गये।

68. गहरा हाथ मारना = अधिक लाभ कमाना।

प्रयोग—शहर के इतने बड़े रईस की लड़की से विवाह करके आपने तो गहरा हाथ मारा है।

69. गुल खिलाना = अनुचित आचरण करना।

प्रयोग—आप तो केवल व्यापार में लगे रहते हो, इसीलिए आपको नहीं पता कि आपकी पुत्री कॉलेज में क्या गुल खिला रही है।

70. गागर में सागर भरना = कम शब्दों में अधिक बात कहना।

प्रयोग—बिहारी ने दोहे जैसे छोटे छंद में अपनी प्रतिभा के बलबूते गागर में सागर भर दिया है।

71. गाल फुलाना = रूठ जाना।

प्रयोग—बहू तुम जरा-जरा सी बात पर गाल फुला लेती हो, यह अच्छी बात नहीं।

72. गाल बजाना = डींगें हॉकना।

प्रयोग—अपनी बहादुरी का बखान करके, क्यों गाल बजा रहो हो, तुम्हारी असलियत हमें पता है।

73. गूलर का फूल होना = दुर्लभ होना।

प्रयोग—आप तो लगता है गूलर के फूल हैं, आज सालों बाद दिखे हैं।

74. गड़े मुर्दे उखाड़ना = बीती बातों का पुनः स्मरण कराना।

प्रयोग—अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर कश्मीर का मामला उठाकर पाकिस्तान जब-तब गड़े मुर्दे उखाड़ता रहता है और यह भूल जाता है कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बन चुका है।

75. गुड़ गोबर करना = काम बिगाड़ना।

प्रयोग—शादी के लिए कितना बढ़िया पण्डाल बनवाया था, पर अचानक आई बारिश ने सारा गुड़ गोबर कर दिया।

76. घाट-घाट का पानी पीना = अत्यन्त अनुभवी होना।

प्रयोग—राजनीति में मोदी जी को पकड़ना सम्भव नहीं है, क्योंकि वे घाट-घाट का पानी पिये हुए हैं।

77. घड़ों पानी पड़ना = अत्यधिक लज्जित होना।

प्रयोग—बरात में जब मोहन को दोस्तों के साथ शराब पीते हुए पिताजी ने देखा, तब उन पर घड़ों पानी पड़ गया।

78. घाव हरा होना = भूला दुःख याद आना।

प्रयोग—करवाचौथ पर सभी स्त्रियों को शृंगार करते देखकर राधा का घाव हरा हो गया, क्योंकि पिछले माह ही तो उसके पति की दुर्घटना में मौत हुई थी।

79. घी के दिये जलाना = प्रसन्नता व्यक्त करना।

प्रयोग—राम के अयोध्या वापस आने पर जनता ने घी के दिये जलाये।

80. घोड़े बेचकर सोना = निश्चिन्त हो जाना।

प्रयोग—बेटी का विवाह हो जाने के बाद सोहन तो घोड़े बेचकर सो रहा है।

81. घाव पर नमक छिड़कना = दुखी व्यक्ति को और दुःख पहुँचाना।

प्रयोग—एक तो वह जेब कटवा कर वैसे ही दुखी है ऊपर से आप उसे मूर्ख बताकर घाव पर नमक छिड़कने का काम कर रहे हैं।

82. घोड़े, पर चढ़े आना = बहुत जल्दी मचाना।

प्रयोग—ग्राहक ने जब दुकानदार से सौदा जल्दी देने को कहा तो दुकानदार बोला—भाई जी आप तो घोड़े पर चढ़े आए हैं, पहले मुझे उन ग्राहकों को तो निपटा लेने दो जो आपसे पहले आए हैं।

83. घात लगाना = अवसर की तलाश में रहना।

प्रयोग—दुष्ट लोग सदैव घात लगाए रहते हैं अतः सावधान, सचेत रहकर ही आप बच सकते हैं।

84. घर घाट एक करना = कठिन परिश्रम करना।

प्रयोग—नौकरी पाने के लिए उसे घर घाट एक करना पड़ा फिर यह नौकरी मिल पाई।

85. चाँदी का जूता मारना = रिश्वत देना।

प्रयोग—सरकारी दफ्तरों में चाँदी का जूता मारकर लोग अपना काम करा लेते हैं।

86. चाँद का टुकड़ा होना = अत्यन्त सुन्दर होना।

प्रयोग—अभिनेत्री हेमामालिनी अपने जमाने में इतनी सुन्दर थीं कि लोग उन्हें चाँद का टुकड़ा कहते थे।

87. चिराग तले अँधेरा होना = विद्वान् के घर मूर्ख होना।

प्रयोग—अध्यापक पुत्र होने पर भी वह निरक्षर ही रहा। यह देखकर लोगों ने टिप्पणी की कि भैया चिराग तले अँधेरा होता ही है।

88. चार चाँद लगना = शोभा बढ़ जाना।

प्रयोग—आपके आने से हमारे समारोह में चार चाँद लग गये हैं।

89. चोली-दामन का साथ होना = गहरा सम्बन्ध होना।

प्रयोग—शराब और जुए का चोली-दामन का साथ है, क्योंकि शराबी अक्सर जुआरी होते हैं और जुआरी अक्सर शराबी होते हैं।

90. चारों खाने चित्त होना = परास्त होना।

प्रयोग—क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया की टीम के आगे दुनिया की सभी टीमों चारों खाने चित्त हो चुकी हैं।

91. चल बसना = मर जाना।

प्रयोग—मैं तो उनसे ज्योतिष विद्या सीखना चाहता था, पर पता लगा कि वे पिछले महीने ही चल बसे।

92. चाँदी काटना = अधिक लाभ कमाना।

प्रयोग—आप जैसे व्यापारी ही तो युद्ध होने पर चाँदी काटने में लग जाते हैं, देशहित की विन्ता नहीं करते।

93. चैन की वंशी बजाना = आनन्दपूर्वक जीवन-यापन करना।

प्रयोग—अब तो मेरे पुत्र की सरकारी नौकरी लग गई है, इसलिए सारी उम्र चैन की वंशी बजाऊँगा।

94. छक्के छुड़ाना = हरा देना।

प्रयोग—भारतीय टीम ने विश्व कप 2011 में पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के छक्के छुड़ा दिये।

95. छठी का दूध याद आना = अत्यन्त कष्टप्रद (कठिन) होना।

प्रयोग—गणित का पेपर देखकर मुझे तो छठी का दूध याद आ गया।

96. छाती पर साँप लोटना = अत्यधिक ईर्ष्या होना।

प्रयोग—पड़ोसी की समृद्धि देखकर आपकी छाती पर साँप क्यों लोट रहा है?

97. जहर की पुड़िया होना = अत्यधिक दुष्ट होना।

प्रयोग—मेरी छोटी ननद हमेशा ताने कसती रहती है, क्योंकि वह पूरी तरह जहर की पुड़िया है।

98. जनवासे की चाल चलना = अत्यधिक सुस्त (धीमा) होना।

प्रयोग—देखो जनवासे की चाल चलकर यह काम पूरा नहीं हो सकता, जरा फुर्ती दिखाओ।

99. जी छोटा करना = निराश होना।

प्रयोग—फेल हो जाने पर जी छोटा मत करो, बल्कि दूने उत्साह से परिश्रम करो, सफलता अवश्य मिलेगी।

100. जी-का जंजाल होना = व्यर्थ का झंझट।

प्रयोग—अरे यार यह मेहमान तो जी-का जंजाल हो गया है। सात दिन से टिका है, जाने का नाम ही नहीं लेता।

101. जमीन-आसमान एक करना = अत्यधिक प्रयास करना।

प्रयोग—प्रथम श्रेणी पाने के लिए मोहन को जमीन-आसमान एक करना पड़ा है, ऐसे ही प्रथम श्रेणी नहीं आ गई।

102. जान हथेली पर रखना = प्राणों की परवाह न करना।

प्रयोग—पर्वतारोही जान हथेली पर रखना पर्वतारोहण करते हैं।

103. जहर उगलना = अपमानपूर्ण कड़वी बातें कहना।

प्रयोग—चुनाव जीतने के लिए प्रतिपक्षी नेता अपने विरोधियों के खिलाफ जहर उगलते रहते हैं।

104. जमीन आसमान का अन्तर होना = अत्यधिक अन्तर होना।

प्रयोग—कांग्रेस और भाजपा की कार्य-शैली में जमीन आसमान का अन्तर है।

105. जी खट्टा होना = मन फिर जाना।

प्रयोग—तुम्हारी ऐसी बातें सुनकर मेरा जी खट्टा हो जाता है।

106. जोड़-तोड़ मिलाना = अनेक उपाय करना।

प्रयोग—बेटी की शादी करने के लिए आपको जोड़-तोड़ मिलाने पड़ेंगे तब काम बनेगा।

107. जवान लड़ाना = उत्तर-प्रत्युत्तर देना।

प्रयोग—बड़ों से जवान लड़ाना तुम्हें शोभा नहीं देता।

108. जीती मक्खी निगलना = जानकर धोखा खाना।

प्रयोग—बदचलन लड़की से मैं अपने पुत्र का विवाह नहीं कर सकता। जान बूझकर जीती मक्खी नहीं निगली जाती।

109. टका-सा जवाब देना = स्पष्ट इन्कार कर देना।

प्रयोग—मैंने जब सोहन से रुपये उधार माँगे तो उसने टका-सा जवाब दे दिया।

110. टेढ़ी खीर होना = कठिन कार्य।

प्रयोग—कश्मीर समस्या सुलझाना वास्तव में टेढ़ी खीर है।

111. टोपी उछालना = बेइज्जती करना।

प्रयोग—तुम्हारे बेटे ने भरी पंचायत में मुझे अपशब्द कहकर मेरी टोपी उछालने का काम किया है।

112. ठोकर लगना = हानि उठाना।

प्रयोग—ठोकर खाकर ही युवाओं को अक्ल आती है, उससे पहले नहीं।

113. डंके की चोट पर कहना = खुले आम कहना।

प्रयोग—मेरे बेटे ने डंके की चोट पर प्रेम विवाह किया है, क्योंकि यह कोई अपराध नहीं है।

114. ढोल में पोल होना = खोखला होना।

प्रयोग—मैं तो उन्हें बड़ा आदमी समझता था, पर वे तो भारी कंजूस निकले, धर्म के नाम पर भी चन्दा नहीं दिया। तब समझ में आया कि ढोल में भी पोल होती है।

115. डिंढोरा पीटना = सबको बता देना।

प्रयोग—अच्छा है कि आपको खेत में गड़ी सम्पत्ति मिल गई, पर दिढोरा क्यों पीट रहे हो, कहीं पुलिस के कान में बात पड़ गई तो लेने के देने पड़ जाएंगे।

116. ढपोरशंख होना = डींग हाँकना।

प्रयोग—वह तो पूरा ढपोरशंख है, कहेगा कि दस हजार चंदा दूँगा, पर देगा एक रुपया भी नहीं।

117. तलवे चाटना = खुशामद करना।

प्रयोग—आज के विधायक मन्त्री बनने के लिए पार्टी मुखिया के तलवे चाटते रहते हैं।

118. तीन-तेरह होना = एकता नष्ट होना, बिखर जाना।

प्रयोग—पिताजी के मरते ही उनका परिवार तीन-तेरह हो गया।

119. तिल का ताड़ बनाना = थोड़ी-सी (छोटी-सी) बात को बड़ा कर देना।

प्रयोग—बात बच्चों की लड़ाई से शुरू हुई, पर आपने तो तिल का ताड़ बनाकर परिवार से ही अलग होने का निश्चय कर लिया।

120. तूती बोलना = प्रभाव होना।

प्रयोग—आजकल भाजपा में नरेन्द्र मोदी की तूती बोल रही है, क्योंकि उनमें चुनाव जितवा सकने की क्षमता है।

121. तलवार के घाट उतारना = मार डालना।

प्रयोग—युद्ध में सौ से अधिक सैनिक तलवार के घाट उतार दिये गये।

122. थाली का बैंगन होना = सिद्धान्तहीन होना।

प्रयोग—आप तो थाली के बैंगन हैं, कभी इस तरफ तो कभी उस तरफ। आपकी अपनी राय क्या है, इसका तो पता ही नहीं चल पाता।

123. दाँत खट्टे करना = पराजित करना।

प्रयोग—सीमा पर हमारे सैनिकों ने दुश्मन के दाँत खट्टे कर दिये।

124. दाँतों तले अँगुली दबाना = आश्चर्य-चकित होना।

प्रयोग—ताजमहल की सुन्दरता देखकर विदेशी सैलानी दाँतों तले अँगुली दबा लेते हैं।

125. दाँत तोड़ना = कड़ा दण्ड देना।

प्रयोग—देखो गाली मत दो, वरना दाँत तोड़ दूँगा।

126. दाल में काला होना = सन्देह होना।

प्रयोग—सुबह-सुबह मोहल्ले में पुलिस को आया देखकर मैं सोचने लगा जरूर कुछ दाल में काला है, लगता है कोई अनहोनी हुई है।

127. दो टूक बात कहना = स्पष्टवादी होना।

प्रयोग—वकील ने गवाह से कहा—देखो दो टूक बात करो, तभी तुम्हारी गवाही का विश्वास जज साहब करेंगे।

128. दाल न गलना = काम न बनना।

प्रयोग—इस केन्द्र पर तुम्हारी दाल न गलेगी क्योंकि यहाँ नकल नहीं होती।

129. दाँत खट्टे करना = पराजित करना।

प्रयोग—बाबा रामदेव की संस्था पतंजलि द्वारा निर्मित दन्तकान्ति टूथपेस्ट ने सभी विदेशी दंतमंजनों (टूथपेस्टों) के दाँत खट्टे कर दिए।

130. दिन दूनी रात चौगुनी = बहुत शीघ्र उन्नति करना।

प्रयोग—माताजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा—बेटा तुम दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करो।

131. दुम दबाकर भाग जाना = डर जाना।

प्रयोग—कोतवाल साहब के आते ही जाम लगाने वाले लोग दुम दुबाकर भाग गए।

132. दिन चढ़ना = गर्भवती होना।

प्रयोग—बहू के दिन चढ़ गए हैं यह जानकर सासू माँ प्रसन्न हो गयीं।

133. दिल बाग-बाग होना = खुश होना।

प्रयोग—वर्षों से बिछड़े मित्र से मिलकर मेरा दिल बाग-बाग हो गया।

134. दाग लगाना = कलंकित होना।

प्रयोग—मेरे परिवार की लड़की भाग जाने से कुल में दाग लगा गया।

135. दूध का दूध पानी का पानी करना = सच्चाई साफ करना।

प्रयोग—इलाहाबाद हाई कोर्ट ने तलवार दम्पति को बेटी की हत्या के जुर्म से बरी करके दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

136. दो-दो हाथ करना = लड़ना।

प्रयोग—कश्मीर समस्या का समाधान तब तक नहीं होगा जब तक भारत पाकिस्तान से दो-दो हाथ नहीं करेगा।

137. धाक जमाना = रौब होना।

प्रयोग—नये अध्यापक ने अपनी विद्वता से दो दिन में ही कक्षा में अपनी धाक जमा ली।

138. धूल में लट्ठ मारना = अनुमान लगाना।

प्रयोग—कत्ल के बारे में तुम कुछ जानते भी हो या यों ही उल्टी-सीधी बातें करके धूल में लट्ठ मार रहे हो।

139. नाक में दम होना = परेशान हो जाना।

प्रयोग—यह लड़का इतना शैतान है कि इसने दो दिनों में ही मेरी नाक में दम कर दिया है।

140. नानी याद आना = परेशानी में फँस जाना।

प्रयोग—इस बच्ची को शॉपिंग कराने में तो मुझे नानी याद आ गयी। दसियों दुकानें देखीं, पर इसे कोई ड्रेस पसन्द ही नहीं आई।

141. नाक का बाल होना = अत्यधिक प्रिय होना।

प्रयोग—एक जमाना था, जब अमर सिंह उत्तर प्रदेश के समाजवादी पार्टी के मुखिया माननीय मुलायम सिंह की नाक के बाल थे।

142. नमक हराम होना = कृतघ्न होना।

प्रयोग—मेरा नौकर इतना नमक हराम होगा, इसका मुझे अनुमान तक न था।

143. नौ दो ग्यारह होना = भाग जाना।

प्रयोग—पुलिस को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गये।

144. नाक रगड़ना = विनती करना।

प्रयोग—नकलची विद्यार्थी के नाक रगड़ने पर भी अध्यापक ने उसे नहीं छोड़ा और नकल की रिपोर्ट भेज दी।

145. पौ बारह होना = लाभ ही लाभ होना।

प्रयोग—युद्ध-काल में व्यापारियों की पौ बारह हो जाती है, क्योंकि वे मुँह माँगी कीमत वसूलते हैं।

146. पेट में चूहे कूदना = बहुत भूखा होना।

प्रयोग—लाओ माँ जो कुछ हो खाने को दे दो, पेट में चूहे कूद रहे हैं।

147. पहाड़ टूट पड़ना = भारी विपत्ति आना।

प्रयोग—अभी उसकी कच्ची गृहस्थी है और पति चल बसा। उस बेचारी पर तो पहाड़ ही टूट पड़ा है।

148. पैर उखड़ना = हार कर भागना।

प्रयोग—सेनापति के मरते ही सैनिकों के पैर उखड़ गये।

149. पाँचों अँगुली बराबर न होना = सब एक समान न होना।

प्रयोग—आगरे की लड़कियाँ चालाक होती हैं, ऐसा कहकर आप अन्याय कर रहे हैं, क्योंकि पाँचों अँगुली बराबर नहीं होती।

150. पीठ में छुरा भोंकना = विश्वासघात करना।

प्रयोग—तुम्हारा विश्वास पार्टी कैसे करे तुमने तो पिछले चुनाव में पार्टी की पीछ में छुरा भोंककर विपक्ष से टिकट ले ली थी।

151. फूल सूँघकर रहना = बहुत कम खाना।

प्रयोग—कहीं मोटी न हो जाऊँ इस चक्कर में लड़कियाँ तो फूल सूँघकर रहती हैं।

152. फूला न समाना = अत्यंत प्रसन्न होना।

प्रयोग—बेटे की नौकरी लग जाने पर अब तो मोहन फूला न समा रहा था।

153. फूलकर कुप्पा होना = अत्यधिक प्रसन्न होना।

प्रयोग—भाई की नौकरी लग गई। यह सुनकर शालिनी तो जैसे फूलकर कुप्पा हो गई।

154. बहती गंगा में हाथ धोना = अवसर का लाभ उठाना।

प्रयोग—परीक्षा में जब सब नकल कर रहे थे तो मैंने भी बहती गंगा में हाथ धो लिये।

155. बाल बाँका न होना = कोई नुकसान न होना।

प्रयोग—दुर्घटना तो जरूर हुई, पर मेरा तो बाल भी बाँका न हुआ।

156. बाल की खाल निकालना = बहुत छानबीन करना।

प्रयोग—वकील लोग बाल की खाल निकालकर मुकदमा जीत लेते हैं।

157. बगलें झाँकना = निरुत्तर होना।

प्रयोग—शोर मचाते बच्चों को डाँटते हुए प्रधानाचार्य ने कहा, यह क्या हो रहा है? कौन शोर मचा रहा था? तो सभी विद्यार्थी बगलें झाँकने लगे।

158. भीगी बिल्ली बन जाना = डर जाना।

प्रयोग—पिताजी के सामने तो तुम भीगी बिल्ली बन जाते हो, अब दहाड़ रहो हो।

159. भाड़े का टट्टू होना = किराये का आदमी।

प्रयोग—एस.पी. साहब ने लाश का मुआयना करके कहा, हत्या भाड़े के टट्टूओं से करवाई गई है, क्योंकि हत्यारे पेशेवर प्रतीत होते हैं।

160. मुँह की खाना = पराजित होना।

प्रयोग—2014 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को पूरे देश में मुँह की खानी पड़ी।

161. मुँह में पानी आना = ललचाना।

प्रयोग—बरात में रसगुल्लों से भरा डोंगा देखकर उसके मुँह में पानी आ गया।

162. म्यान से बाहर होना = अत्यधिक क्रोध करना।

प्रयोग—शिव धनुष को टूटा हुआ देखकर परशुराम म्यान से बाहर हो गये।

163. मैदान मारना = जीत लेना।

प्रयोग—2011 का एक दिवसीय क्रिकेट विश्व-कप जीतकर भारतीय क्रिकेट टीम ने मैदान मार लिया।

164. मिली भगत होना = दुरभिसन्धि होना।

प्रयोग—मैं जानता हूँ कि मुझे नौकरी से निकलवाने में तुम दोनों की मिली भगत है।

165. मुँह पर कालिख लगाना = कलंक लगाना।

प्रयोग—रिश्वत लेते हुए रंगेहाथ पकड़े जाने पर अधिकारी के मुँह पर कालिख लग गई।

166. रंग में भंग पड़ना = आनन्द में बाधा पड़ना।

प्रयोग—दूल्हे के भाई की दुर्घटना में अचानक मृत्यु होने से विवाह वाले घर में रंग में भंग पड़ गया।

167. रंगा सियार होना = कपटी मनुष्य।

प्रयोग—आजकल गेरुए वस्त्र पहनकर तमाम लोग साधु-संन्यासी बने फिरते हैं, जबकि इनमें से अधिकांश रंगे सियार होते हैं।

168. रंगे हाथ पकड़ना = मौके पर पकड़ा जाना।

प्रयोग—उस रिश्वती क्लर्क को अधिकारी ने रंगे हाथ पकड़ लिया।

169. रोज कुआँ खोदना रोज पानी पीना = प्रतिदिन कमाकर जीवन-यापन करना।

प्रयोग—बड़े शहरों में रहने वाले तमाम गरीब रोज कुआँ खोदकर रोज पानी पीते हैं, उनके पास जमा पूंजी नहीं होती है।

170. रोंगटे खड़े होना = भयभीत होना।

प्रयोग—भूत-प्रेत की कहानियाँ सुनकर उसके तो रोंगटे खड़े हो गए।

171. राई से पर्यत करना = छोटे से बड़ा करना।

प्रयोग—बच्चों के झगड़े को तूल देकर आपने राई में पर्यत करने का काम किया है, यह समझदारी नहीं कही जा सकती।

172. लोहा लेना = साहसपूर्वक सामना करना।

प्रयोग—शिवाजी ने जीवनपर्यन्त मुगलों से लोहा लिया।

173. लहू का घूँट पीना = क्रोध को दबाना।

प्रयोग—तुम्हारी कड़वी बातों को सुनकर मैं लहू का घूँट पीकर रह गया, अन्यथा झगड़ा हो जाता।

174. लीपा-पोती करना = छिपाने का प्रयास करना।

प्रयोग—अध्यापक ने पूछा सच-सच बताओ क्या हुआ था, इस तरह लीपा-पोती करने से काम न चलेगा।

175. लुटिया डुबो देना = सर्वनाश कर देना।

प्रयोग—मेरे साझीदार ने अपनी मूर्खता से मेरे व्यापार की तो लुटिया ही डुबो दी।

176. लकीर का फकीर होना = पुरानी रीति पर चलना।

प्रयोग—इस वैज्ञानिक युग में भी तमाम लोग लकीर के फकीर बने हुए हैं।

177. लोहे के चने चबाना = अत्यधिक कठिन कार्य।

प्रयोग—परीक्षा में शत-प्रतिशत अंक लाना लोहे के चने चबाने जैसा कार्य है।

178. श्रीगणेश करना = प्रारम्भ कर देना।

प्रयोग—मकान बनाने का श्रीगणेश तो कर दिया है, देखें कब तक काम समाप्त होता है।

179. सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना = प्रारम्भ में ही संकट आना।

प्रयोग—व्यापार प्रारम्भ करते ही पहले सौदे में ही एक लाख की हानि हो गयी, ये तो सिर मुड़ाते ही ओले पड़ गये।

180. सीधी अँगुली से घी न निकलना = प्रेमपूर्ण व्यवहार से काम न बनना।

प्रयोग—कई बार तगावा करने पर भी जब रुपये न मिले तो साहूकार बोला—लगता है सीधी अँगुली से घी नहीं निकलेगा।

181. सोने की चिड़िया होना = अत्यन्त समृद्ध होना।

प्रयोग—अतीत में भारत इतना समृद्ध था कि विदेशी इसे 'सोने की चिड़िया' कहते थे।

182. सिर माथे पर रखना = अत्यन्त आदर देना।

प्रयोग—गुरुजी जब भी मेरे घर आते हैं मैं उन्हें सिर माथे पर रखता हूँ।

183. सिर धुनना = पश्चाताप करना।

प्रयोग—पिताजी ने कहा फेल हो जाने पर अब सिर धुन रहे हो, जब कहता था पढ़ाई कर लो तब सुनते नहीं थे।

184. सिर पर हाथ होना = सहारा या वरद हस्त होना।

प्रयोग—जब तक नरेन्द्र मोदी का सिर पर हाथ है तब तक अमित शाह का कुछ भी नहीं बिगड़ सकता।

185. हाथ का मैल होना = तुच्छ होना।

प्रयोग—यार रुपया तो हाथ का मैल है उसके लिए तुम्हारी दोस्ती कुर्बान नहीं कर सकता।

186. हवाईयों उड़ना = घबरा जाना।

प्रयोग—पुलिस के पकड़ लेने पर उस रिश्वती अधिकारी के चेहरे पर हवाईयों उड़ने लगीं।

187. हक्का-बक्का रह जाना = आश्चर्य-चकित होना।

प्रयोग—पिता के निधन की खबर सुनकर वह तो हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि अभी कल ही तो उनसे बात हुई थी।

188. हथेली पर सरसों जमाना = शीघ्र चाहना।

प्रयोग—धैर्य रखो, काम हो जायेगा भैया, हथेली पर सरसों कहीं नहीं जमती।

189. हाथ धोकर पीछे पड़ना = बुरी तरह पीछे पड़ना।

प्रयोग—आप तो हाथ धोकर मुझ गरीब के पीछे पड़ गए हो, मैंने कहा तो कि चोरी मैंने नहीं की, पर आप हैं कि मानते ही नहीं।

190. हवा के घोड़े पर सवार होना = उतावली करना।

प्रयोग—आप आप हैं तो कुछ देर बैठिए, लेकिन आप तो जैसे हवा के घोड़े पर सवार रहते हो।

190. हाथ-पाँव फूलना = घबरा जाना।

प्रयोग—ट्रेन दुर्घटना का समाचार सुनकर मेरे तो हाथ-पाँव फूल गए क्योंकि इसी ट्रेन से पिताजी आ रहे हैं।

191. हॉ में हॉ मिलाना = चापलूसी करना।

प्रयोग—मंत्री जी की हॉ में हॉ मिलाने वाले अधिकारी वास्तव में कर्तव्यनिष्ठ नहीं होते।

कुछ प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ एवं उनके वाक्य-प्रयोग

1. अन्धों में काना राजा = गुणहीनों में थोड़े गुण वाला श्रेष्ठ।

प्रयोग—अपने अशिक्षित परिवार में रमेश हाईस्कूल पास करके अन्धों में काना राजा बना हुआ है।

2. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता = अकेला आदमी कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकता।

प्रयोग—अरे भाई! क्यों पत्थर से सिर मार रहे हो? इस अत्याचारी के विनाश के लिए तुम क्या कर सकते हो, क्योंकि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

3. अधजल गगरी छलकत जाय = ओछा अथवा कम योग्य व्यक्ति अपना विज्ञापन अधिक करता है।

प्रयोग—गाँव में बहुत से लड़के एम. ए., बी. ए. पास हैं, पर वे शान्त हैं। हाईस्कूल पास बलभद्र सब जगह अपने पढ़े-लिखे होने की प्रशंसा करता फिर रहा है। विवश होकर लोगों को कहना पड़ा, अधजल गगरी छलकत जाय।

4. अपनी करनी पार उतरनी = जैसा करना वैसा फल प्राप्त करना।

प्रयोग—दुर्योधन के दुराग्रह से महाभारत में सब कुछ नष्ट हो जाने पर उदास दुर्योधन को देखकर विदुर ने कहा था—अपनी करनी पार उतरनी।

5. अभी दिल्ली दूर है = लक्ष्य मिलने में देर होना।

प्रयोग—अभी तुम हाईस्कूल में पढ़ रहे हो। मेडिकल में प्रवेश लेने के लिए अभी दिल्ली दूर है।

6. अरहर की टट्टी गुजराती ताला = कम मूल्य की वस्तु की सुरक्षा के लिए अधिक व्यय करना।

प्रयोग—रामलाल को अपने बाग से एक लाख रुपया वार्षिक लाभ होता है, पर उसकी सिंचाई और रखवाली पर डेढ़ लाख रुपया खर्च हो जाता है। इसी को कहते हैं, अरहर की टट्टी गुजराती ताला।

7. अशर्कियाँ लुटें कोयले पर मोहर या मोहरें लुटें कोयले पर चाक = अधिक मूल्य की वस्तु की सुरक्षा नहीं और कम मूल्य वाली पर प्रतिबन्ध।

प्रयोग—तुम्हारा सारा घर फिजूलखर्ची करता है, पर नौकर का वेतन नहीं बढ़ाया जाता। यह तो अशर्कियाँ लुटें कोयले पर मोहर वाली बात हुई।

8. आँख के अन्धे नाम नैनसुख = नाम के अनुरूप गुण न होना।

प्रयोग—शेरसिंह के नाम से उन्हें वीर मत समझो। वे आँख के अन्धे नाम नैनसुख को चरितार्थ करते हैं।

9. आगे नाथ न पीछे पगहा = पूरी तरह स्वतन्त्र।

प्रयोग—श्याम अकेला है, घर में मस्त पड़ा रहता है, न उसके आगे नाथ है न पीछे पगहा है।

10. आधा तीतर आधा बटेर = बेमेल होना, एकरूपता का अभाव।

प्रयोग—खट्टर का कुर्ता और टेरेलिन का पाजामा पहनने वाला रमेश आधा तीतर आधा बटेर है।

11. आधी छोड़ सारी को धावें, आधी रहे न सारी पावें अथवा आधी छोड़े एक को धावें, ऐसो डूबे थाह न पावें = अधिक लालच करने पर अपना धन भी हाथ से निकल जाता है।

- प्रयोग**—मोहन बैंक की नौकरी छोड़कर धन कमाने के लिए लॉटरी में रुपये फूँकने लगा और अपना मकान भी इसमें दे बैठा। सच है, आधी छोड़ सारी को धावै आधी मिले न सारी पावै या सही कहा है, आधी छोड़ एक को धावै, ऐसी डूबै थाह न पावै।
- 12. आपका जूता आपके सिर =** जिसका सिद्धान्त उसी पर लागू करना, विरोधी के साधन से ही विरोधी को हराना या हानि पहुँचाना।
प्रयोग—मित्रगण सिनेमा का निमन्त्रण देकर आपको ले गये और आपके पैसे से सबने सिनेमा देखकर आपका जूता आपके सिर कर दिया।
- 13. आम के आम गुठलियों के दाम =** एक वस्तु से दोहरा लाभ।
प्रयोग—अध्यापन कार्य से पैसा भी मिलता है और यश भी। अतः सच है आम के गाम गुठलियों के दाम।
- 14. आप मरे तो जग मुआ =** स्वयं न होने पर संसार व्यर्थ।
प्रयोग—सौतेले भाई-बहनों के लिए अपने आपको तबाह मत करो, क्योंकि आप मरे तो जग मुआ।
- 15. आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास =** अपने उद्देश्य से भिन्न और नीच कर्म करना।
प्रयोग—राधेलाल प्रोफेसर की नौकरी छोड़कर अभिनेता बनने के लिए मुम्बई गये। वहाँ उन्हें कुलीगिरी करते देखकर एक मित्र ने कहा, आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।
- 16. इमली के पात पै बरात का डेरा =** थोड़े स्थान पर अधिक लोगों को एकत्र करना।
प्रयोग—तुमने अपने छोटे से कमरे में सौ लोगों को निमन्त्रण दिया है। इमली के पात पर बरात का डेरा कैसे हो सकेगा?
- 17. उठी पैठ आठवें दिन लगती है =** कोई कार्य बन्द कर देने पर शीघ्र आरम्भ नहीं होता।
प्रयोग—नेताजी से आज ही पत्र लिखवा लो, फिर न जाने कब आयें, क्योंकि उठी पैठ आठवें दिन लगती है।
- 18. उतावला सो बावला =** हड़बड़ी में आदमी सब कुछ गलत करता है।
प्रयोग—तुमने वहाँ पहले जाकर सारा काम बिगाड़ दिया, क्योंकि उतावला सो बावला होता है।
- 19. ऊँट किस करवट बैठे =** परिणाम निश्चित नहीं।
प्रयोग—पता नहीं, चुनाव का ऊँट किस करवट बैठे।
- 20. ऊँट की चोरी निहुरे-निहुरे =** निन्दित कार्य छिपता नहीं।
प्रयोग—एक लाख का गबन नहीं छिप सकता। कभी ऊँट की चोरी निहुरे-निहुरे हुई है?
- 21. ऊँट के मुँह में जीरा =** आवश्यकता से बहुत कम वस्तु दिया जाना।
प्रयोग—वाह बन्धु ! चौबेजी को आप पचास ग्राम रबड़ी खिला रहे हैं ! वाह, यह तो ऊँट के मुँह में जीरे के समान ही है।
- 22. उल्टे बाँस बरेली को =** असंगत कार्य करना।
प्रयोग—आगरा स्वयं पेठे के लिए प्रसिद्ध है और तुम कानपुर से आगरा पेठा ले जा रहे हो। तुम तो भाई, उल्टे बाँस बरेली की कहावत चरितार्थ कर रहे हो।

- 23. ऊँची दुकान फीका पकवान =** वास्तविकता कम, दिखावा अधिक।
प्रयोग—रामू देखने में ही धनवान लगता है, अन्यथा उस पर कर्जा लदा है। यह जानकर किसी ने कहा कि यहाँ तो ऊँची दुकान पर फीका पकवान है।
- 24. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे =** दोषी होने पर भी दूसरे को दोष देना।
प्रयोग—एक ने नकल कर रहे थे और अब मुझे ही आँखें दिखा रहे हो। यह तो वही कहावत हुई कि उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।
- 26. उंगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना =** धीरे-धीरे साहस बढ़ जाना।
प्रयोग—परीक्षा में निरीक्षक ने जब नकलची विद्यार्थी की छोटी सी पर्ची नजरंदाज कर दी तो उसने गैस पेपर निकाल लिया। यह देखकर निरीक्षक बोला तुम तो उंगली पकड़कर पहुँचा पकड़ने का काम कर रहे हो, अब नहीं छोड़ूँगा।
- 25. एक अनार सौ बीमार =** कोई वस्तु आवश्यकता से बहुत कम होना।
प्रयोग—पार्टी किसी एक को टिकट देगी और पचास लोग टिकट माँग रहे हैं। पार्टी में इस समय एक अनार सौ बीमार है।
- 26. एक चुप सौ को हराये =** मौन सबसे अच्छा है।
प्रयोग—कोई कुछ कहे, चुप रहो, इसी में आनन्द है। कहावत भी तो है कि एक चुप सौ को हराये।
- 27. एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा =** बुरे को बुरे का साथ मिलना।
प्रयोग—राम चोरी तो करता ही था, शराब और पीने लगा। न जाने क्या होगा? एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा।
- 28. एक पंथ दो काज =** एक काम करने से दो उद्देश्य पूर्ण होना।
प्रयोग—दुकान जा रहा हूँ, कहे तो रास्ते में पड़ने वाली सब्जी मण्डी से सब्जी भी लेता आऊँ। इस तरह—एक पंथ दो काज हो जायेंगे।
- 29. एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है =** एक बुरा व्यक्ति पूरे समाज को बदनाम करता है।
प्रयोग—इने-गिने गुण्डे छात्रों के कारण ही कॉलेज बदनाम हो गया है। कहावत जो है कि एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।
- 30. एक म्यान में दो तलवारें =** एक स्थान पर दो अधिकारी।
प्रयोग—एक कार्यालय में दो-दो अधिकारी। भला साथ-साथ कैसे काम कर सकते हैं? एक म्यान में दो तलवारें भला कैसे समायेंगी?
- 31. एक हाथ से ताली नहीं बजती =** लड़ाई एक तरफ से नहीं होती।
प्रयोग—शिकायत करने चल दिये, जैसे तुमने कुछ भी नहीं कहा। भाई, एक हाथ से ताली नहीं बजती।
- 32. ऐब करने को हुनर चाहिए =** बुरे कामों में भी योग्यता आवश्यक है।
प्रयोग—नकल करके पास हुआ तो तुम्हारा कौन-सा माल मार लिया, तुम कर लेते। भाई ! ऐब करने को भी हुनर चाहिए।
- 33. एक परहेज सौ इलाज =** दवा की अपेक्षा परहेज लाभ करता है।
प्रयोग—आजकल दवाओं में मिलावट चल रही है, इसलिए एक परहेज सौ इलाज पर विश्वास करो।
- एक थैली के चट्टे-बट्टे होना =** समान प्रकृति वाले व्यक्ति।
प्रयोग—इन नेताओं में कोई भला नहीं है। सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

34. ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर = कठिन कार्य करने के लिए संकल्प करने पर विपत्ति से क्या डरना अथवा विपत्ति में धैर्य धारण करना।

प्रयोग—भाई, सच कह रहे हो, सेना में नौकरी करके अब तो ओखली में सिर दे दिया, फिर मूसलों से डरकर क्यों भागूँ? जो होगा, सो देखा जायेगा।

35. ओछे की प्रीति बालू की भीत = ओछे व्यक्ति की मित्रता स्थायी नहीं होती।

प्रयोग—रामू आजकल मनोहर की मित्रता के भरोसे निश्चिन्त बैठा है। मनोहर बहुतों को धोखा दे चुका है। रामू से भी उसकी मित्रता अधिक नहीं चल सकती, क्योंकि ओछे की प्रीत बालू की भीत होती है।

36. ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती = थोड़ी वस्तु से आवश्यकता पूर्ण नहीं होती।

प्रयोग—दो इमरती लेकर पत्ता चाट रहे हो। भले आदमी, ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती।

37. अंगूर खट्टे हैं = वस्तु के न मिलने पर दोष निकालना।

प्रयोग—रामा से तुम्हारा विवाह नहीं हो सका, अब तुम उसे बदचलन बता रहे हो यह तो वही बात हुई कि अंगूर खट्टे हैं।

38. कंगाली में आटा गीला = विपत्ति पर विपत्ति आना।

प्रयोग—रामू के पास जीवन-निर्वाह के लिए दूध देने वाली एक भैंस थी, वह भी कल मर गई। इस प्रकार उसका कंगाली में आटा गीला हो गया।

39. कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर = समय बदलता रहता है।

प्रयोग—रामनिवासजी, गणेश को राजनीति में लाये थे। आज गणेश का पार्टी में बहुत प्रभाव है। रामनिवासजी टिकट पाने को गणेश की खुशामद कर रहे हैं। ठीक ही कहा जाता है कि कभी गाड़ी नाव पर और कभी नाव गाड़ी पर।

38. करमहीन खेती करै, बैल मरै या सूखा परै = भाग्यहीन मनुष्य कोई भी कार्य करे, उसी में उसे घाटा या बाधा मिलती है।

प्रयोग—तोताराम जो भी कार्य करता है, उसमें हानि ही हानि होती है। उसके लिए तो सच है—करमहीन खेती करै, बैल मरै या सूखा परै।

39. कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली = स्थिति में बहुत अन्तर होना।

प्रयोग—सुरेश सिंह ने मनोहर को मित्र बनाना चाहा तो मनोहर ने कहा—तुम मन्त्री के लड़के और मैं ठहरा मजदूर। भला कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली। अतः यह मित्रता निभ नहीं पायेगी।

40. कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा = इधर-उधर की बेमेल चीजें अथवा असम्बद्ध लोगों को एकत्र करना।

प्रयोग—अटल बिहारी वाजपेयी की एन. डी. ए. सरकार में तेरह दल थे जिनकी विचारधारा में भी समानता न थी। यह देखकर विपक्षी दलों ने कटाक्ष किया—कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा।

41. काँटे से काँटा निकलता है = दुष्ट के साथ दुष्टता करनी पड़ती है।

प्रयोग—रामेश्वरजी बहुत भले आदमी थे। जब लालसिंह ने कई बार उनके खेत उजड़वा दिये और चोरी कर ली तो रामेश्वर ने डकैती का झूठा

मुकदमा चलाकर लालसिंह को जेल करा दी। रामेश्वर बेचारे क्या करते? काँटे से काँटा निकलता है।

42. कानी के ब्याह में सौ झगड़े = अपात्र मनुष्य का काम मुश्किल से बनता है।

प्रयोग—रामू कम पढ़ा-लिखा होने से बेकार था, उसे कहीं नौकरी नहीं मिली थी। नेताजी ने उसे एक जगह चपरासी का काम दिलवाया, तभी सरकार ने नई भर्ती पर रोक लगा दी। नेताजी बोले—कानी के ब्याह में सौ झगड़े होते हैं।

43. काला अक्षर भैंस बराबर = बिलकुल अशिक्षित।

प्रयोग—आज भी उत्तर प्रदेश के पिछड़े जिलों में रहने वाले 75% लोगों के लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

44. कुत्ते को मुँह लगाने पर मुँह चाटता है = नीच को आदर देने पर अपनी ही बदनामी होती है।

प्रयोग—मना करने पर मनोहरलाल ने हरी जैसे प्रसिद्ध गुण्डे को मित्र बना लिया। एक बार उसने मनोहर लाल की पिटाई कर दी तो लोगों ने कहा—हम तो पहले ही कह रहे थे कि कुत्ते को मुँह लगाने पर मुँह चाटता है।

45. का वर्षा जब कृषि सुखानी = अवसर निकल जाने पर सहायता करना व्यर्थ है।

प्रयोग—परीक्षा का मेरा पेपर कल हो गया। आप पुस्तक आज दे रहे हैं। यह मेरे किस काम की? का वर्षा जब कृषि सुखानी?

46. काम का न काज का दुश्मन अनाज का = बिना काम बैठे-बैठे खाना।

प्रयोग—छोटे भाई की उम्र 40 वर्ष हो गई पर अभी तक बेकार है। यह देखकर पिताजी ने उससे कहा कि तेरी तो स्थिति ठीक वैसी है कि काम का न काज का दुश्मन अनाज का।

47. कागहि कहा कपूर चुगाए स्वान नहवाये गंग = दुर्जन व्यक्ति अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता।

प्रयोग—चोर को चाहे जितना समझाओ वह चोरी करना नहीं छोड़ सकता—यह देखकर उपदेशक महोदय ने सिर पीटते हुए कहा—कागहि कहा कपूर चुगाए स्वान नहवाये गंग।

48. कोठी वाला रोवे, छप्पर वाला सोवे = धनी की अपेक्षा निर्धन सुखी रहता है।

प्रयोग—गाँव के प्रधानजी डाकुओं के भय से रातभर जागते हैं, जबकि गरीब लोग आराम की नींद सोते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है—कोठी वाला रोवे, छप्पर वाला सोवे।

49. कोयले की दलाली में हाथ काले = बुरे काम में बुराई मिलती है।

प्रयोग—रामनिवासजी डाकुओं से सोने-चाँदी के जेवर खरीदते थे। एक बार उन्हें पुलिस पकड़कर ले गयी तो लोगों ने कहा कि कोयले की दलाली में हाथ काले होते ही हैं।

50. खग जाने खग ही की भाषा = जो जहाँ और जिसके साथ रहता है, वह वहाँ और उन लोगों की बात जानता है।

प्रयोग—ब्रजभूमि के रीति-रिवाज और भाषा ब्रजवासी ही समझ सकता है, क्योंकि खग जाने खग ही की भाषा।

51. खरी मजूरी चोखा दाम = खरे पैसे देना और पूरा काम लेना।

प्रयोग—रामाश्रय का सिद्धान्त है, खरी मजूरी चोखा काम। इसलिए मेहनती मजदूर दूसरों का काम छोड़कर रामाश्रय के यहाँ काम करना पसन्द करते हैं।

52. खेत खाये गदहा, मार खाये जुलहा = अपराध का दण्ड उसके संरक्षक को देना।

प्रयोग—चोरी रमेश ने की और पुलिस वाले उसके मालिक अब्दुल्ला को पकड़ ले गये। यह सुनकर लोगों ने कहा—खेत खाये गदहा और मार खाये जुलहा।

53. खोदा पहाड़ निकली चुहिया = कठोर परिश्रम करने पर भी कुछ विशेष लाभ न होना अथवा जितना प्रचार किया जाए, तदनुसार नगण्य उपलब्धि होना।

प्रयोग—प्रधानमन्त्री की योजनाओं का प्रचार और उसके परिणामों को देखकर यही कहना पड़ता है कि खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

54. खिसियानी बिल्ली खम्मा नौचे = सबल पर जोर न चलना परन्तु दुर्बल को सताना।

प्रयोग—स्त्रियाँ पति का तो कुछ बिगाड़ नहीं पाती, तब संतान को पीटकर वे खिसियानी बिल्ली खम्मा नौचे कहावत को चरितार्थ करती हैं।

55. खुदा गंजे को नाखून नहीं देता = अनधिकारी को अधिकार नहीं मिलता।

प्रयोग—यदि मुझे मुख्यमंत्री बना दें तो मैं पूंजीपतियों की सारी संपत्ति जब्त करने का आदेश दे दूँ। यह सुनकर मेरा मित्र बोला खुदा गंजे को नाखून इसीलिए नहीं देता।

56. गुड़ खाये गुलगुलों से परहेज = सम्बन्धित व्यक्ति को भी स्वीकारना पड़ता है।

प्रयोग—रामेश्वर ने अछूत मंगत को घर में नौकर रखा, पर उसके लड़के से घर में घुसने पर मना कर दिया। तब उनसे लोगों ने कहा—यह क्या बात हुई? गुड़ खाये और गुलगुलों से परहेज।

57. घर की मुर्गी दाल बराबर = अपनी वस्तु का महत्व नहीं समझा जाता।

प्रयोग—यह रेशमी कालीन पैर पोंछने के काम आ रहा है। खरीदते तो पता चलता। अभी घर की मुर्गी दाल बराबर है।

58. छछूंदर के सिर में चमेली का तेल = अनमेल बात।

प्रयोग—काले-कलूटे और बेकार रमेश को बी. ए. पास सुन्दर पत्नी क्या मिली कि लोगों ने कहा—छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।

59. छोटे मुँह बड़ी बात = अपनी स्थिति से बढ़कर घोषणा करना।

प्रयोग—विपक्षी पार्टी के साधारण कार्यकर्ता ने जब मुख्यमंत्री को चुनाव में हरा देने की बात कही तो लोगों ने इसे छोटे मुँह बड़ी बात कहा।

60. जल में रहकर मगर से बैर = स्वामी से शत्रुता नहीं कर करते।

प्रयोग—यदि कालेज में नौकरी करनी है तो प्रबंधक की बात तो माननी ही पड़ेगी, क्योंकि जल में रहकर मगर से बैर नहीं कर सकते।

61. जाके पाँव न फटी बिवाई सो का जाने पीर पराई = भुक्त भोगी ही वास्तविकता को समझ सकता है।

प्रयोग—तुमने लड़की का विवाह तो किया नहीं इसलिए तुम्हें क्या पता कि सही वर ढूँढ़ने में कितनी परेशानी होती है। सच कहा है जाके पाँव न फटी बिवाई सो का जाने पीर पराई।

62. जस दूल्हा तस बनी बराता = जैसा मनुष्य वैसे उसके साथी।

प्रयोग—अयोग्य अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भी अयोग्य बना देता है। सच है, जस दूल्हा तस बनी बराता।

63. जिसकी लाठी उसकी भैंस = बलशाली की चलती है।

प्रयोग—आजकल आपाधापी मच रही है। सभी लूट रहे हैं, कोई देखने वाला नहीं है। जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत सर्वत्र चरितार्थ हो रही है।

64. झूठ के पैर नहीं होते = झूठ अधिक दिन तक नहीं छिपता।

प्रयोग—सुरेन्द्र कहते हैं कि वे जिला अदालत में क्लर्क हैं। आज गाँव के एक आदमी के वहाँ जाने पर पता चल ही गया कि वे वहाँ चपरासी हैं। झूठ के कहीं पैर होते हैं।

65. टाट की गोम में पाट की थेगली = मूल्यहीन लोगों के साथ मूल्यवान का होना।

प्रयोग—लाल सिंह ने अपनी बी. ए. पास पुत्री अनपढ़ परिवार में ब्याह कर टाट की गोम में पाट की थेगली लगायी है।

66. तीन बुलाये तेरह आये = थोड़े लोगों के बुलाने पर बहुतों का पहुँचना।

प्रयोग—पण्डित परशुराम की पुत्री राधा की गोद भरने पाँच आदमी बुलाये गये थे, पर आये पचास लोग। राधा के पिता को कहना पड़ा कि 'तीन बुलाये तेरह आये' की परम्परा अभी चल रही है।

67. तेते पाँय पसारिये जेती लॉबी सौर = अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही काम करना चाहिए।

प्रयोग—आज की महँगाई में सुख से बही रह सकता है जो 'तेते पाँय पसारिये जेती लॉबी सौर' के सिद्धान्त पर चलता हो।

68. तीन कनौजिया तेरह चूल्हे = अत्यधिक पवित्रता का दिखाना।

प्रयोग—वहाँ चार प्राणी हैं पर हरेक अपना खाना स्वयं पका रहा था। यह देखकर किसी ने टिप्पणी की कि यहाँ तो तीन कनौजिया तेरह चूल्हे वाली मिसाल है।

69. तन पर नहीं लत्ता, पान खांय अलबत्ता = व्यर्थ का प्रदर्शन।

प्रयोग—घर में भुनी भांग नहीं पर दोस्तों के साथ ऐश करने में कोई कमी नहीं है। यह देखकर किसी ने टिप्पणी की कि भाई यहाँ तो तन पर नहीं लत्ता, पान खांय अलबत्ता वाली स्थिति है।

70. तबेले की बला बंदर के सिर = दोष किसी का पर दोषारोपण किसी अन्य पर।

प्रयोग—गुरु जी, नकल वह लड़का कर रहा था, पर आपने पकड़ मुझे लिया। यह तो वही बात हुई कि तबेले की बला बंदर के सिर।

71. थोथा चना बाजे घना = सारहीन (व्यक्ति) बहुत आवाज करता है। ओछे व्यक्ति बहुत बढ़-चढ़कर बातें करते हैं।

प्रयोग—आजकल अनेक नेता थोथा चना बाजे घना वाली कहावत चरितार्थ कर रहे हैं, क्योंकि वे पार्टी को बहुमत दिलाने की बात तो करते हैं पर स्वयं अपनी सीट भी नहीं निकाल सकते।

72. दूर के ढोल सुहावने = दूर की चीजें अच्छी लगती हैं।

प्रयोग—संस्थान की बड़ी प्रशंसा सुनी थी, पर वहाँ रहकर देखा, तब सच्चाई ज्ञात हुई, कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

73. **देसी मुर्गी विलायती बोली** = असंगत और बेढंगा कार्य।

प्रयोग—आज की भारतीय युवतियाँ फैशन की ऐसी दीवानी हैं कि उन्हें देखकर कभी-कभी कहना पड़ता है कि देसी मुर्गी विलायती बोली बोल रही है।

74. **दूसरे के कन्धे पर रखकर बन्दूक चलाना** = दूसरे के सहारे कार्य सम्पादित करना।

प्रयोग—दूसरे के कन्धे पर रखकर बन्दूक क्या चला रहे हो, दम है तो सामने आकर प्रहार करो।

75. **देशी घोड़ी लाल लगाम** = बेमतलब का फैशन करना।

प्रयोग—मैं बूढ़ी हो गई अब तुम मेरे लिए लिपिस्टिक लाए हो। यदि मैं इस उम्र में लिपिस्टिक लगाऊँगी तो लोग कहेंगे—देशी घोड़ी लाल लगाम।

76. **दाम लगाए लंगोटिया यार** = व्यक्ति अपनों से ही धोखा खाता है।

प्रयोग—तुम्हारे कारण मुझे कलंकित होना पड़ा क्योंकि तुम मेरे लंगोटिया यार हो वरना आज तक मेरे ऊपर कोई उंगली तक नहीं उठा सका। सच है — दाम लगाए लंगोटिया यार।

77. **दिन दूनी रात चौगुनी** = अत्यधिक उन्नति करना।

प्रयोग—आजकल युद्ध में व्यापारी वर्ग दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की कर रहा है।

78. **दाँत से कौड़ी पकड़ना** = कंजूस होना।

प्रयोग—वह सूदखोर है अतः लड़के के ब्याह में भी कुछ खर्च न करेगा यह देखकर कोई बोला अरे भाई वह तो दाँत से कौड़ी पकड़ता है।

79. **दाँत कुरेदने को तिनका तक न होना** = बहुत अधिक दयनीय स्थिति में का आ जाना।

प्रयोग—उनके घर लड़की दे रहे हो, क्या तुम्हें पता नहीं आजकल वहाँ दाँत कुरेदने को तिनका तक नहीं है।

80. **न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी** = न इतने अधिक साधन होंगे और न काम होगा।

प्रयोग—रमेश ने गोपाल से कुछ ऐसी शर्त लगाई, जो पूरी न हो सके। इस पर गोपाल ने कहा कि 'न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।'

81. **नाच न जाने आँगन टेढ़ा** = अपना दोष दूसरों पर मढ़ना।

प्रयोग—रमा को गाना नहीं आता, पर बहाना बनाती है, हरमोनियम खराब होने का। इसी को कहते हैं—नाच न जाने, आँगन टेढ़ा।

82. **नौ दिन चले अढ़ाई कोस** = आलस्य के कारण बहुत धीरे काम करना।

प्रयोग—रघुवर को मैदान की सफाई करने के लिए कहा था, परन्तु उसने तो सात दिन में भी यह कार्य पूरा नहीं किया। यह देखकर किसी ने कहा—नौ दिन चले अढ़ाई कोस वाली कहावत चरितार्थ कर रहे हो।

83. **मँगनी के बैल के दाँत नहीं देखे जाते** = मुफ्त में मिलने वाली वस्तु के गुण-अवगुण नहीं देखे जाते।

प्रयोग—संस्कार कराकर लौटे पण्डितजी के हाथ में खदर भण्डार की तौलिया देखकर मुहल्ले के चौधरी ने कहा, "पण्डितजी किस कंजूस जजमान के यहाँ गये थे?" सुनते ही पण्डितजी ने चौधरी साहब से कहा, "मँगनी के बैल के दाँत नहीं देखे जाते।"

84. **मन चंगा तो कठौती में गंगा** = पवित्र हृदय वाले का घर तीर्थ है।

प्रयोग—शुद्ध आचरण करने वाले व्यक्ति को हर स्थान पर ईश्वर सुलभ है। सच है, मन चंगा तो कठौती में गंगा।

85. **मान न मान मैं तेरा मेहमान** = किसी के न चाहने पर भी उससे सम्बन्ध जोड़ना।

प्रयोग—नेताजी को प्रान्त की राजधानी में कोई नहीं पूछता, पर वे सभी से घनिष्ठ सम्बन्ध बताकर वहीं जमे रहते हैं। इसी को मान न मान मैं तेरा मेहमान कहते हैं।

86. **मुँह में राम बगल में छुरी** = कथनी में अच्छी बात, लेकिन आचरण में ठीक उसके विपरीत बुरा काम करना।

प्रयोग—आज भारतीय नेताओं का चरित्र तो मुँह में राम बगल में छुरी जैसा ही है। कहते कुछ हैं, करते कुछ और हैं।

87. **मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त** = जिसे आवश्यकता है, वही सुस्त (उदासीन) है और सहायक चुस्त।

प्रयोग—आज भारतीय विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन को देखकर यही कहना पड़ता है कि मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त, क्योंकि छात्र पढ़ने नहीं आते, जबकि अध्यापक नियमित कक्षा में बैठे रहते हैं।

88. **मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक** = व्यक्ति अपने सम्बन्धियों की ही सहायता लेता है। (अपनी सीमाओं में रहकर काम करना)

प्रयोग—प्रधानजी पुलिस के दलाल हैं। उनके घर चोरी हुई तो थानेदार के ही पास जायेंगे। मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक होती है।

89. **मेढकी को भी जुकाम हुआ है** = छोटे आदमी का अपनी औकात से अधिक शान दिखाना, या अपनी हैसियत भूलना।

प्रयोग—सुखिया को चमकीली रेशमी साड़ी पहने देखकर पंडिताइन ने कहा—अहा! अब तो मेढकी को भी जुकाम हुआ है।

90. **मानो तो शंकर नहीं तो पत्थर** = जैसा मान लो वही है।

प्रयोग—गंगा किनारे पड़ी इस बटिया को उठा लाए हो क्या यह भगवान है। यह पूछने पर मैंने कहा—मानो तो शंकर नहीं तो पत्थर तो है ही।

91. **रोज कुआँ खोदना रोज पानी पीना** = प्रतिदिन कमाना।

प्रयोग—रामसिंह बेचारा मेले में जाकर क्या करेगा? उसे तो रोज कुआँ खोदना और रोज पानी पीना है।

92. **लाठी के बल बैदरी नाचे** = दण्ड के भय से सभी वशीभूत हो जाते हैं अथवा चंचल प्रकृति के व्यक्ति भी डर के वशीभूत हो जाते हैं।

प्रयोग—कल्लू निरन्तर उपद्रव कर रहा था, किन्तु अपने पिताजी को देखकर पढ़ने बैठ गया। सच है, लाठी के बल बैदरी नाचे।

93. **साँच को आँच कहाँ** = सत्य की विजय होती है।

प्रयोग—नौकर पर चोरी का आरोप लगाकर मालिक ने पुलिस बुलाने की धमकी दी, तो उसने कहा—"बुला लीजिए। साँच को आँच कहाँ।"

94. **साँप मरे ना लाठी दूटे** = बिना हानि के कार्य सम्पन्न करना।

प्रयोग—उसने अपने शत्रु का काम भी कर दिया और एक पैसा भी खर्च नहीं किया। वास्तव में वह इस कहावत में विश्वास करता है कि साँप मरे ना लाठी दूटें।

95. **सावन हरे न भादों सूखे** = सदा एक-सा रहना।

प्रयोग—दिनेशजी में कोई परिवर्तन नहीं है। भले ही अब वे रिटायर्ड हो गये हैं। उन्हें देखकर लगता है कि सावन हरे न भादों सूखे।

96. सूत न कपास जुलाहे से लड्डम लड्डा = आधार बिना किसी से झगड़ा करना।

प्रयोग—पार्टी में राधेलाल को चुनाव का टिकट देने की चर्चा तक नहीं है, पर वे गाँव वालों को गालियाँ दे रहे हैं कि लोग मेरा टिकट कटवाना चाहते हैं। लोगों ने उन्हें समझाया कि 'सूत न कपास, जुलाहे से लड्डम लड्डा' अच्छी बात नहीं होती है।

97. साप मरे ना लाठी दूटे = बिना हानि के कार्य सम्पन्न कर लेना।

प्रयोग—उसने बिना अधिक पैसा खर्च किए मुकदमा जीत लिया। इसे देखकर किसी ने टिप्पणी की कि इसे कहते हैं साप मरे ना लाठी छूटें।

98. हाथ कंगन को आरसी क्या = प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता।

प्रयोग—यमुना में बाढ़ आई हुई है। अविश्वास क्यों करते हो, हाथ कंगन को आरसी क्या? कौन बहुत दूर है?

99. होनहार बिरवान के होत चीकने पात = जो होनहार होते हैं, उनके गुण और उज्ज्वल भविष्य के लक्षण प्रारम्भ में ही दिखाई पड़ जाते हैं।

प्रयोग—लालबहादुर शास्त्री जी बचपन से ही साहसी और निर्भीक थे। उनको देखकर लोग कहते थे—होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

निम्नलिखित मुहावरों का सही अर्थ दिये गये विकल्पों में से चुनिए—

1. लकीर का फकीर होना—

- (a) परम्परावादी होना। (b) आधुनिक होना।
(c) आडम्बरविहीन होना। (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) परम्परावादी होना।

YUKTI ज्ञान—लकीर का फकीर होना = परम्परावादी होना। आडम्बर विहीन होना या आधुनिक होना इस मुहावरे का अर्थ नहीं है।

प्रयोग—उसके पिताजी तो पूरे लकीर के फकीर हैं, अपनी जाति को श्रेष्ठ मानकर लड़के की शादी गैर जाति में नहीं कर सकते।

2. आँख की किरकिरी होना—

- (a) धोखा देना। (b) अप्रिय होना।
(c) कष्टदायक होना। (d) बहुत प्रिय होना।

उत्तर—(b) अप्रिय होना।

YUKTI ज्ञान—आँख की किरकिरी होना = अप्रिय होना।

प्रयोग—वह तो मेरी आँख की किरकिरी बन गया है जब देखो तब रास्ते में छेड़ता है।

3. गाँठ का पूरा होना—

- (a) कुलीन (b) मालदार
(c) धैर्यवान (d) होशियार

उत्तर—(b) मालदार

YUKTI ज्ञान—गाँठ का पूरा होना = मालदार (धनवान) होना।

प्रयोग—राधा ने उससे इसलिए विवाह किया क्योंकि वह गाँठ का पूरा है।

4. छठी का दूध याद आना—

हरियाणा टी.ई.टी.

- (a) बहुत मेहरबानी होना। (b) अत्यधिक कठिन होना।
(c) अवसर से लाभ उठाना। (d) काम न बनना।

उत्तर—(b) अत्यधिक कठिन होना।

YUKTI ज्ञान—छठी का दूध याद आना = अत्यधिक कठिन होना।

प्रयोग—गणित का पेपर देखकर मुझे तो छठी का दूध याद आ गया।

5. माथा ठनकना—

- (a) भेद खुलना। (b) शक होना।
(c) भय से घबराना। (d) पराजित होना।

उत्तर—(b) शक होना।

YUKTI ज्ञान—माथा ठनकना = शक होना।

प्रयोग—नौकर को घर से गायब देखकर मेरा माथा ठनक गया और मुझे पता चल गया कि घोरी उसीने की है तभी वो घर से भाग गया।

निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ दिये गये विकल्पों में से चुनिए—

6. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं—

हरियाणा टी.ई.टी.

- (a) पराधीनता अभिशाप है। (b) पराधीन पुत्री को सुख न मिलना।
(c) पुत्री अभिशाप है। (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) पराधीनता अभिशाप है।

YUKTI ज्ञान—पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं = पराधीनता में सुख प्राप्त नहीं होता।

प्रयोग—तुलसी ने ठीक ही लिखा है— पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। पराधीन व्यक्ति को दूसरों की गुलामी करनी पड़ती है और गुलामी में व्यक्ति को सुख नहीं है।

7. हाथ कंगन को आरसी क्या—

हरियाणा टी.ई.टी.

- (a) प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता।
(b) अँगुली पर नाचना।
(c) फारसी पढ़ना।
(d) मूल्यवान के आगे तुच्छ का विकास न होना।

उत्तर—(a) प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता।

YUKTI ज्ञान—हाथ कंगन को आरसी क्या? = प्रत्यक्ष के प्रमाण की क्या आवश्यकता।

प्रयोग—अखबार पढ़ने वाले उस व्यक्ति से टेलीग्राम पढ़वा लें क्योंकि वह पढ़ा—लिखा है। कहा गया है— हाथ कंगन को आरसी क्या और पढ़े लिखे को फारसी क्या?

8. जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ—

- (a) कठिन परिश्रम से लक्ष्य मिलता है।
(b) व्यर्थ की वकवास नहीं करनी चाहिए।
(c) अधिक परिश्रम का कम फल मिलना।
(d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) कठिन परिश्रम से लक्ष्य मिलता है।

YUKTI ज्ञान—जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ = कठिन परिश्रम से लक्ष्य प्राप्त होता है।

प्रयोग—उसने परिश्रम करके अंततः आईएस की परीक्षा पास कर ही ली क्योंकि उसका विश्वास था कि जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ।